https://www.printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

जुवेनाइल इडियोपैथिक आर्थराइटिस (जे.आई.ए.)

के संस्करण 2016

1. जे.आई.ए. क्या है ?

1.1 यह क्या है?

जुवेनाइल इडियोपैथिक आर्थराइटिस (जे.आई.ए.) लम्बे समय तक चलने वाली जोड़ों के सूजन की बीमारी है ; जोड़ों में सूजन के विशिष्ट लक्षण हैं दर्द, सूजन और गतिविधि में रुकावट। "इडियोपैथिक" का मतलब है कि हमें बीमारी के कारण का पता नहीं है और जुवेनाइल का मतलब है कि लक्षणों की शुरुआत आमतौर पर सौलह साल की उमर से पहले होती है।

1.2 क्रोनिक का मतलब क्या है?

किसी भी बीमारी को क्रोनिक तब कहा जाता है जब उपयुक्त इलाज के बावजूद बीमारी तुरन्त ठीक नहीं होती पर बीमारी के लक्षणों एवं खून की जांचों में सुधार आ जाता है।
इसका यह भी मतलब है कि बीमारी के पता लगने के वक्त यह बताना मुश्किल होता है कि बीमारी कितने समय तक रहेगी

1.3 यह बीमारी कितनी आम है?

जे. आई. ए एक असामान्य बीमारी है जो 1000 में से 1-2 बच्चों को प्रभावित करती है ।

1.4 इस बीमारी के क्या कारण है ?

हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली (इम्यून सिस्टम) हमें संक्रमण (बैक्टीरिया एवं वाइरस) से बचाती है ।यह बाहरी, खतरनाक और जिसे समाप्त करना है एवं अंदरुनी के बीच का अंतर बता सकती है ।
यह समझा जाता है कि लम्बे समय का गठिया इस प्रतिरक्षा प्रणाली की असामान्य प्रतिक्रिया का नतीजा है जिसके कारण यह अपने और बाहरी तत्वों की पहचान नहीं कर पाता और अपने शरीर के तत्वों को ही नुकसान पहुंचाता है ।इस कारण से जे.आई.ए को "ऑटो इम्यून" भी कहा जाता है, जिसका मतलब है कि प्रतिरक्षा प्रणाली अपने ही शरीर के

खिलाफ काम करती है।
किन्तु लम्बे समय तक चलने वाली बाकी बीमारियों की तरह जे.आई.ए. के मुख्य कारणों का पता नहीं है।

1.5 क्या यह अनुवांशिक बीमारी है ?

जे.आई.ए. एक अनुवांशिक बीमारी नहीं है क्योंकि यह माता-पिता से सीधे बच्चों में नहीं होती, किंतु कुछ अनुवांशिक कारणों से यह बीमारी कुछ लोगों में ज्यादा पाई जाती है जिन कारणों का अभी पता नहीं लगा है। वैज्ञानिक मानते हैं कि यह बीमारी अनुवांशिक कारणों एवं पर्यावरण (शायद संक्रमण) का मिला जुला परिणाम है। यद्धपि अनुवांशिक कारणों का इस बीमारी में योगदान है, फिर भी यह बीमारी एक ही परिवार के दो बच्चों में बहुत कम पाई जाती है।

1.6 इस बीमारी की पुष्टि कैसे की जाती है ?

इस बीमारी की पुष्टि के लिए जरुरी है कि जोड़ों में सूजन हो एवं अन्य बीमारियां जिनके कारण जोड़ों में दर्द हो सकता है, उन बीमारियों का जांच द्वारा पता लगाया जाए।
जे.आई.ए. तब कहते हैं जब बीमारी 16 वर्ष की आयु से पहले शुरु हो, इसके लक्षण 6 हफ्ते से ज्यादा हों और ऐसी कोई भी बीमारी न हो जिनके कारण जोड़ों में दर्द हो सकता हो।
6 हफ्ते की समय सीमा इसलिए रखी गई है ताकि संक्रमण से होने वाले अस्थायी गठिये से इसकी अलग पहचान की जा सके। जे.आई.ए. के अंतर्गत वह सभी प्रकार के गठिये आते हैं जिनके कारणों का पता नहीं है और जिनकी शुरुआत बचपन में होती है।
जे.आई. ए. के अंतर्गत अनेक प्रकार के गठिये आते हैं (नीचे देखिये)
xxxxx

1.7 जोड़ों को क्या होता है ?

साइनोवियल झिल्ली, जो जोड़ों के इर्द-गिर्द होती है, सामान्यत: बहुत पतली होती है, वह गठिये में मोटी हो जाती है और जोड़ों के बीच का द्रव्य पदार्थ (साइनोवियल फ्लूअड) ज्यादा बनने लगता है जिसके कारण जोड़ों में दर्द, सूजन एवं जोड़ों को हिलाने में दिक्कत होती है। जोड़ों में सूजन का एक मुख्य लक्षण है लम्बे समय तक आराम करने के बाद जोड़ों का अकड़ जाना, इस कारण से यह दिक्कत सुबह के समय ज्यादा होती है (सुबह के समय जोड़ों में जकड़न)
अधिकतर बच्चे जोड़ों में दर्द को कम करने के लिये जोड़ों को टेढ़ा रखते हैं जिसे एन्टेल्जिक कहा जाता है, मतलब दर्द को कम करना। अगर जाड़ों को लम्बे समय तक टेढ़ा रखा जाए(सामान्यत: एक महीने से ज्यादा) तो मांसपेशियां सिकुड़ जाती हैं जिससे टेढ़ापन स्थायी हो जाता है ।
अगर ठीक से इलाज न किया जाए तो जोड़ों में सूजन से, दो मुख्य कारणों से, जोड़ खराब हो सकते हैं : साइनोवियल झिल्ली बहुत मोटी हो जाती है (साइनोवियल पैनस बन जाता है) और ऐसे पदार्थ बनाती है जिनके कारण हड्डी व जोड़ नष्ट होने लगते हैं । एक्स-रे पर हड्डियों में

सुराख नजर आते हैं (बोन इरोज़न)। जोड़ों को लम्बे समय तक टेढ़ा रखने के कारण मांसपेशियां सिकुड़ जाती है, (मांसपेशियों का सिकुड़ जाना), मांसपेशियों में खिंचाव आ जाता है जिसके कारण जोड़ों में स्थायी नुकसान हो जाता है ।